जुड़वा

एक शारीर में तीन दिल - जुड़वा बच्चे कुदरत का करिश्मा हैं। सगर्भा स्त्री को जब पता चलता हैं कि वह जुड़वा बच्चों को जन्म देने वाली हैं तो वह दुगुन भावों को महसूस करती हैं। दो बच्चों को एक साथ जन्म देकर अत्यधिक ख़ुशी का एहसास और साथ-साथ पालने-पोषने में आनेवाले कई परेशानियां का धीरपूर्वक सामना करने का साहस जुडवा बच्चों को जन्म देनेवाली माँ जितना अनुभव करती हैं, उतना ही उनके सुरक्षित रूप से दुनिया में वे आखें खोले उसकी सदा चिंता करती हैं।

जुड़वा बच्चे दो प्रकार के होते हैं - आइडेंतिकल और नॉन-आइडेंतिकल (फठेर्नल)। आइडेंतिकल जुड़वा बच्चें लिंग, रूप, रंग और स्वाभाव में एक से होते हैं। आइडेंतिकल जुड़वा बच्चों के बीच एक ही प्लासेन्टा होता हैं।

नॉन-आइडेंतिकल जुड़वा बच्चे का लिंग, रूप, रंग, स्वाभाव सब अलग होते हैं। उन बच्चों के बीच कभी कभी एक ही प्लासेन्टा होने के बावजूद भी अलग अलग गर्भाशय कि थैली में उनका विकास होता हैं।

जुड़वा बच्चों के प्रारमभिक वर्षो में दो-तीन साल तक बड़ा करने में बहुत परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं क्योंकि नासमझ होने के कारण बच्चे एक साथ माँ-बाप का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कई शरारत करते हैं। बच्चों का एक साथ रोना, बिलखना, बीमार पड़ना या इजाग्रस्त होना माँ-बाप को परेशान कर देता हैं। वे पल भर के लिए समझ नहीं पाते हैं किसकी तरफ ध्यान दे और किसकी तरफ नहीं। नॉन-आइडेंतिकल बच्चे भी एक साथ नहीं तो आगे पीछे बीमार पड़ते ही हैं। उनका स्वाभाव, पसंद-नापसंद भिन्न होने के कारण कई बार माता-पिता को दोनों को एक साथ खुश रखने में मुश्किलें उठानी पड़ती हैं।

जुड़वा बच्चों में यदि एक लड़का ओर एक लड़की हो तो परिवार पूर्ण हो जाता हैं। माता-पिता बच्चों के भविष्य के लिए शुरू से ही प्रबंध करने लगते हैं ओर उनमे आत्मनिर्भरता और अपने पाव पर खड़े होने कि शिक्षा देने में लग जाते हैं।

जुड़वा बच्चे इश्वर कि देन हैं। उनकी प्रत्येक गतिविधियाँ घर को ख़ुशी से भर देती हैं। परंतु इस मेहेंगाई के ज़माने में दो बच्चों को एक साथ एक समान परवरिश करना और उन्हें जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए योग्य बनाला लोहे को चने चबाने जैसा कार्य हैं।

अनुष्का मालानी और अनिरुद्ध मालानी
कक्षा 6

आज़ादी तो मिल ही चुकी थी चौसठ साल पहेले
कितनी तकलीफें वीरो ने है इसके लिए झेले

सोने की चिड़िया कहलाता था, भारत देश हमारा
न जाने कहा खो गया वह सुन्दर सा नज़ारा

कश्मीर स्वर्ग था, नदियाँ से लेकर जंगले तक थे प्यारे
लेकिन अब नाईट आउट से लेकर डिस्क हो गए प्यारे

बहन की राखी, माँ की रोटी, इन रिश्तो से जूड़ते थे
अब, पिज्ज़ा खाना, मौज उड़ाना, फेसबुक के आसमान में उड़ते हैं।

जीवन का दिनचर्या बिगड़ा, रात को जागना दिन में सोना
वकत का पाबंद ना होना, समय को मस्ती में खोना।

जीवन के मूल्यों को खोकर क्या जीवन में पाओगे?
अब सोओगे तो याद रखो जीवन में आगे पछताओगे,
मेहनत करके जीवन में सदा अच्छा नाम कमाओगे।

आतिफ राशिद
कक्षा 9

रिची अग्रवाल
कक्षा 10

श्रीपरना साहा
कक्षा 10